E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मध्य प्रदेश में राजनीतिक दलों के विकास में लोकतंत्र की भूमिका

डॉ. ऊषा त्रिपाठी

प्रध्यापक : राजनीतिशास्त्र

शासकीय अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद स्नातकोत्तर महाविद्यालय निवाड़ी (म. प्र.)

मार्तण्ड सिंह तोमर

शोध—छात्र,राजनीति शास्त्र,

महाराजा छत्रसाल बुंदेलखण्ड शासकीय स्नातकोत्त महाविद्यालय निवाड़ी (म. प्र.)

Paper Rcevied date

05/06/2025

Paper date Publishing Date

10/06/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15865722

IMPACT FACTOR 5.924

शोध-सार

भारतीय राजनीति में राष्ट्रीय राजनीतिक दलों की अहम भूमिका है जिसके सम्बन्ध में लोगों की विभिन्न विचारधाराएं है। भारतीय संविधान का संरचनात्मक स्वरुप बनाते समय अनेक राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय दलों का प्रारूप तैयार किया गया जिनका सम्बन्ध संवैधानिक एवं सामाजिक है। सभी राष्ट्रीय दलों की अलग-अलग विचारधाराएं, अवधारणयें एवं सिद्धान्त है, जिसके आधार पर उनके स्वरूप का निर्माण किया जाता है।

भारतीय लोकतन्त्र के विकास में दलीय व्यवस्था की महत्वपूर्ण भूमिका है, जिसका सम्बध राज्य एवं राष्ट्र की स्वायत्तता निर्वाचन पद्धति में दलीय स्वरुप का एक प्रारूप है, जिसके आधार पर सभी राजनीतिक दलों के घोषणापत्र एवं सैद्धान्तिक विचारधाराएं एवं उनकी शक्तियाँ तथा न्यायायिक सक्रियता अलग-अलग है। दलीय व्यवस्था का सम्बन्ध समूह की विशेषताओं, समाजवाद, लोकतन्त्रवाद, सम्यवाद एवं राष्ट्रवाद के विभिन्न आयामों पर केन्द्रित है।

मुख्य बिन्दु - विचारधाराएं, अवधारणयें, घोषणापत्र, लोकतन्त्रवाद, सम्यवाद।

भारत में दलीय व्यवस्था का स्वरूप समय.समय पर बदलता रहा है उसका कारण विभिन्न शक्तिशाली नेतृत्व केंद्र एवं राज्य के विवाद राज्य स्तरीय दलों का औचित्य एवं विभिन्न दलो की जो राजनीति की प्रकृति में नये सैद्धातिक आधार पृष्ठभूमि एवं कार्य प्रणाली की व्यवस्थित करती है।

संघात्मक शासन प्रणाली में विद्यमान पृथक.पृथक प्रदेशों या क्षेत्रो के कारण राजनीतिक दलों का निर्माण विकास में आसानी होती है। संघात्मक प्रदेशों के आकार संख्या एकता और विविधता से दलीय राजनीति और लोकतन्त्र प्रभावित होती है। यदि किसी संघ के प्रदेशों का आकार विशाल हो संख्या कम हो तो लेकतन्त्र में क्षेत्रीय दलों. सम्भावना अधिक रहती है। संघ के घटक प्रदेश में एकता पायी जाती हैए लोकतंत्र में सुदृढ़ और संगठित क्षेत्रीय दल के विकास की सम्भावना वढ़ जाती है । (1)

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मध्य प्रदेश में चौथे आमचुनाव के बाद कांग्रेस को पूर्ण बहुमत प्राप्त हो गया। 08 मार्च को श्री डी०पी० मिश्र ने नया मन्त्रिमण्डल बनाया। किन्तु 19 जुलाई को गोविन्द नरायण सिंह के नेतृत्व में 36 कांग्रोसियों ने दल त्याग दिया। शिक्षा मंत्रालय की माँगो पर डी०पी० मिश्र की सरकार पराजित हो गयी। अगले दिन गोविन्द नरायण सिंह के नेतृत्व में संयुक्त मोर्चे की सरकार बनी और '19' दल-बदलू मंत्री वन गये। अनेक उतार-चढ़ाव, दल बदल के बीच मार्च 1969 तक मोर्चा सरकार चलती रही। अन्त में गोविन्द नरायण सिंह अपने दल-बदलुओं के साथ कोग्रेस में मिल गये और फिर से मध्य प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बन गयी। (2)

मध्य प्रदेश में एक लोकतान्त्रिक फैसले की कसोटी क्या होती है ? इस पर वाद विवाद होता रहा है। सामान्य तौर पर टकराव का हल करने वाले मॉडल के रूप में लोकतन्त्र एवं राजनीतिक दलों को बहुमत के शासन से जोड़ा जाता है। लेकिन इससे अल्पसंख्यकों के दमन की समस्या उत्पन्न होती है।

दूसरी और यह लोकतान्त्रिक समाजों से यह उम्मीद की जाती है कि वे आम सहमति से फैसले पर पहुंचे। आज हम जब मध्य प्रदेश के सन्दर्भ में काग्रेस के लोकतान्त्रिक विकास के ढाँचे की वात करते है, तो आमतौर पर हमारे दिमाग में उदारवादी लोकतन्त्र की तस्वीर होती है। जो लोकतन्त्र का एक प्रभुत्वशाली रूप है। (3)

1956 से लेकर वर्तमान समय तक म.प्र. में कांग्रेस पार्टी से बनने वाले मुख्यमंत्रियों की तालिका नीचे दी जा रही है।

मध्य प्रदेश के संदर्भ भाजपा की नीति अनेक बातों सम्बन्ध में प्राचीन जनसंघ से मिलती हुई है और इस सम्बन्ध में यह समझा जाता है कि भाजपा केन्द्र राज्य सम्बन्धो में केन्द्रीय सरकार को आधिक शक्तिशाली वनाने के पक्ष में इस विचार की इस तथ्य से पुष्टि होती है, 06 मई 1980 को जारी किये गये आधारभूत नीति वक्तव्य में दल को जिन पाँच निष्ठाओ प्रतिवद्ध बतलाया गया उनमें प्रदाय निष्ठा राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय समन्वय है। लेकिन स्थिति का एक अन्य पक्ष यह भी है कि यह दल राज्य सरकारों पर केन्द्र के अनुचित नियंत्रण का विरोध करता है।

अटल बिहारी बाजपेयी के शब्दों में वह एक मजबूत केन्द्र के पक्ष में है, जो देश की एकता और अखण्डता की रक्षा करते में समर्थ हो किन्तु उसे राज्यों के संविधान प्रदत्त आधकारों के हनन् का आधिकार नहीं होना चाहिए। राज्यों और अधिक वित्तीय आधीकार दिया जाना एक उचित बात है, ताकि वे जनता के प्रति अपने वढ़ते हुए दायित्वों को पूर्ण कर सके।

मध्य प्रदेश में भारतीय जाता पार्टी पक्ष व विपक्ष दोनो रूपों में रही है, जिसका सम्बन्ध दलीय व्यवस्था एवं संघवाद से है। दल प्रणाली एवं संघीय व्यवस्था का घनिष्ठ सम्बन्ध है। म०प्र० में भारतीय जनता

पार्टी में परिवर्तन के साथ-साथ संघवाद का स्वरूप बदलता रहा है।

म०प्र० में सफल संघवाद की सफलता इस बात पर निर्भर करती है, कि राजनीतिक दल में सामन्जस्य एवं समझौते की भावना किस सीमा तक विकसित होती है।

भाजपा के संविधान में निम्न पाँच सिद्धान्त है, सार्थक है, जिनका उपयोग मौलिक और भाजपा में उदय एवं लोकतन्त्रात्मक विकास के लिए उत्तरदायी तत्व है, जिनका सम्बन्ध लोकतन्त्रात्मक स्वरूप एवं विचारधारा से है।

1- दल ने राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय एकीकरण पर वल दिया तथा क्षेत्रीय हितों को राष्ट्रीय हितों के समक्ष गौड़ मानती है।

2- दल लोकतन्त्र और नागरिकों के मौलिक अधिकारों के लिए कटिवद्ध है।

3- यह दल सांस्कृतिक राष्ट्रवाद (हिन्दुत्व) में विश्वास करती है।

4- यह हल गाँधीवादी अर्थव्यवस्था में विश्वास रखती है।

5- यह समाज में निर्धनता का उन्मूलन आवश्यक मानती है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मध्य प्रदेश की दलीय व्यवस्था में अभूतपूर्व परिवर्तन हुए, इसके लिए विभिन्न प्रकार के उत्तरदायी कारक है।

1- भारतीय जनता पार्टी का उदय एक विपक्ष के रूप में हुआ जिसका सम्बन्ध जनता की आवश्यकताएं एवं आकांक्षाएं है।

2- दलीय व्यवस्था का एक बहुत बड़ा परिवर्तन यह भी है कि लोकतन्त्र को सशक्त वनाना तथा श्रेणीय दलों को समाप्त करना।

3- राजनीति नैतिकता एवं सिद्धान्तों का उत्थान एवं पतन भी सारतत्व नहीं होते वल्कि समय- समय पर परिवर्तन होता रहता है।

4- छोटी-छोटी-राजनीतिक पार्टियों की संख्या में वृद्धि होने के कारण नया कानून 1905 ई0 में बना, जिसका नाम दल बदल कानून है, जिस कारण दलों के विभाजन पर प्रतिबंध हुआ फिर भी क्षेत्रीय दल प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रीय दलों को हानि पहुंचाते है।

5 - राजनेताओं की महत्वाकांक्षा एवं व्यक्तिगत स्वार्थ भी राजनीतिक दलों को विकसित करते है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय पार्टियां एवं क्षेत्रीय पार्टियों की तनाशाही को रोकने का प्रयास करती है।

6- आवश्यक राजनीतिक दलों के निर्माण के रोक सम्वन्धी कोई विशिष्ट प्रावधान न होने के कारण छोटे राजनीतिक दलों के निर्माण में प्रोत्साहन मिला है जो वड़े राष्ट्रीय दलों को नुकसान पहुंचाते है।

भाजपा को सशक्त बनने में सरकारिया आयोग का विशेष योगदान रहा है। सरकारिया आयोग ने प्रस्तुत अपने ज्ञापन में भाजपा ने व्यक्त किया। ऐसा कुछ भी नहीं किया जाना चाहिए जिससे देश की एकता कमजोर हो। राज्यों के संसाधनों के अन्तरण की व्यवस्था इस प्रकार होनी चाहिए ताकि वह इनके दायित्वों के अनुरूप हो। वित्त आयोग के स्वरूप में उचित परिवर्तन किया जाए।

राज्यपाल को शक्तियों के दुरुपयोग से रोकने के लिए संविधान में परिवर्तन किया जाय।

फरवरी 1998 में प्रकाशित भाजपा के घोषणा पत्र में कहा गया है कि पार्टी संविधान की धारा 356 का दुरुपयोग रोकने के लिए,आवश्यक कदम तत्काल उठाएगी। सरकारिया आयोग के सुझावों को तत्काल लागू किया जायेगा एवं राज्यपालों को नियुक्ति से पूर्व राज्य सरकारों से किया जायेगा। भाजपा ने ने यह भी वादा किया है कि राज्यों को शक्तिशाली बनाने के लिए संसाधनों का आबंटन बढ़ाया जायेगा। (4)

मध्य प्रदेश की राजनीति में भारतीय जनता पार्टी के हाथ लगातार मिलती सफलता और प्रदेश में दो दशकों से जारी उसके राजनीतिक प्रभाव ने सामाजिक बदलाव के इस खोखली स्थिति पर ढक्कन जैसा लगा रखा है। वर्ष 2003 में छत्तीसगह के राज्य बनने के पश्चात हुए प्रथम चुनाव से ही भाजपा इस राज्य में शासन में रही है। भले ही प्रत्येक विधान सभा चुनाव में उसकी लोकप्रियता में गिरावट आती रही हो। म०प्र० में वर्ष 2018 के विधान सभा चुनावों में भाजपा पांच सीटों के अन्तर से कांग्रेस से चुनाव हार गई लेकिन '15' माह की कमलनाथ सरकार कुख्यात आपरेशन कमल के द्वारा गिरा दी गई और कांग्रेस के वागी नेता ज्योतिरादित्य सिंधिया की मदद से भाजपा मध्य प्रदेश की सत्ता मे फिर से आ गई।

भाजपा व जब-जब मध्य प्रदेश की सत्ता में अयी है, पार्टी ने लोकतन्त्र के विकास और लोकतान्त्रिक ढांचे को बनाने लिए विभिन्न कार्य किये है। समाज के प्रत्येक वर्ग को लाभ पहुंचाने के लिए भारतीय जनता पार्टी ने अनेक योजनाएं बिना भेद भाव से राज्य में क्रियान्वित करवायी है। राज्य में बेरोजगारी समाप्त करने के लिए भाजपा सरकारें कुतसंकल्पित रही है।

मध्यप्रदेश में भारतीय जनता पार्टी का मुख्य उद्देश्य पिछड़े वोटो पर रहा है। इस वोट को आकर्षित करने के लिए भाजपा ने विभिन्न प्रकार की योजनाएं बनायी और समय-समय पर पिछड़े वर्ग से मुख्यमन्त्री इस राज्य में बनाये उमा भारती, बाबूलाल गौर, शिवराज सिंह चौहान पिछड़े वर्ग से ही आते है, और राज्य में भाजपा के शासनकाल में मुख्यमन्त्री पद पर पदासीन रहे थे।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मध्य प्रदेश की जनसंख्या में 50 प्रतिशत अधिक पिछड़ा वर्ग के लोग है। इस राज्य में अभी तक मण्डल की धमक सुनाई नहीं दी है। बीते दो दशको से भाजपा राज्य में कृषकों का कायाकल्प करना चाहती है। राज्य की छवि को सुधारने के क्रम यही विजय गाथा सुनाई जाती रही है। लेकिन किसान संगठनों का प्रदेश की राजनीति में कोई खास असर नही है। भले ही वर्ष 2017 ई0 में किसानों पर हुई गोलीवारी के बाद संगठनो ने विरोध प्रदर्शन किया हो।

संदर्भ सूची

1.जैन पुखराज फड़िया, साहित्य भवन प्रकाशन आगरा, संस्करण 2008, पृ.184

2. जैन पुखराज फाड़िया बी.एल. साहित्य भवन प्रकाशन आगरा,संस्करण - 2008

3. भार्गव राजीव आचार्य अशोक राजनीतिक सिद्धान्त पिर्यसन प्रकाशन संस्करण - 2011 पृ. 111-112

4.जैन पुखराज फड़िया बी. एल. साहित्य भवन प्रकाशन आगरा-2008